शिक्षक - रवि शंकर राय, विषय - अर्थशास्त्र

दिनांक - 07-07-2020 वर्ग - B.A. II

3.1. भूमिका (Introduction) Agricultural performance since Independence across crops and zones.

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी है। कृषि विकास के द्वारा ही आर्थिक विकास सम्भव है। भारत के पहले प्रधानमन्त्री पण्डित जवाहर लाल नेहरू कृषि की सफलता को विशेष महत्त्व देते थे। उनके विचार में, "हमारे पास कृषि में सफलता के इलावा कुछ नहीं।" ("There is no help for us but to succeed in agriculture.")

♦ 3.2. कृषि का अर्थ (Meaning of Agriculture)

कृषि एक उद्योग है जिसमें भूमि को जोतकर फसलें उगाई जाती हैं तथा पशु-पालन किया जाता है। इस प्रका कृषि में दो प्रकार की क्रियाएँ शामिल होती हैं–कृषि क्रियाएँ तथा अन्य क्रियाएँ।

♦ 3.2.1. कृषि की क्रियाएँ (Activities of Agriculture)

1. प्राथमिक क्रियाएँ (Primary Activities)— इसमें कृषि से सम्बन्धित क्रियाएँ शामिल की जाती हैं जै अनाज, दाल, सब्जियाँ, फल, गन्ना, कपास, तिलहन, पटसन इत्यादि की फसलें उगाना।

2. गौण क्रियाएँ (Secondary Activities)— इसमें अन्य क्रियाएँ शामिल होती हैं जैसे पशु-पालन, मुर्ग पालन, डेयरी फार्मिंग, बागान आदि।

♦ 3.3. कृषि का महत्त्व (Importance of Agriculture)

कृषि का भारतीय अर्थव्यवस्था में विशेष महत्त्व है। योजना आयोग (Planning Commission) के अनुस "योजनाओं की सफलता के लिए कृषि का विकास सबसे अधिक आवश्यक है।" वास्तव में कृषि का अर्थव्यवस्था सभी क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण योगदान है।

Ravi Shankar Ray

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्त्व निम्नलिखित है–

कृषि का महत्त्व

1. राष्ट्रीय आय वृद्धि में कृषि का महत्त्व
2. औद्योगिक विकास में महत्त्व
3. आन्तरिक व्यापार में महत्त्व
4. विदेशी व्यापार में महत्त्व
5. रोजगार में महत्त्व
6. जीवन का साधन
7. पूँजी–निर्माण में महत्त्व
8. यातायात व संचार के साधनों का विकास
9. सामाजिक महत्त्व
10. अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में महत्त्व

1. राष्ट्रीय आय वृद्धि में कृषि का महत्त्व (Importance of Agriculture in National Income)— कृषि के माध्यम से कुल राष्ट्रीय आय में वृद्धि हुई है। सन् 1951-52 भारत में सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में कृषि का भाग 49% था। यह 1989-90 में कम होकर 30% तथा 2006-07 में कम हो कर 19% रह गया। पिछले कुछ वर्षों से कृषि का GDP में प्रतिशत योगदान कम हो रहा है परन्तु फिर भी कुल योगदान बढ़ रहा है।

2. औद्योगिक विकास में महत्त्व (Importance in Industrial Development)— कृषि का औद्योगिक विकास में भी विशेष स्थान है। देश के छोटे–बड़े उद्योगों के लिए कच्चा माल कृषि से प्राप्त होता है, जैसे—सूती वस्त्र उद्योग के लिए कपास, चीनी उद्योग के लिए गन्ना, पटसन उद्योग के लिए कच्चा पटसन इत्यादि। किसी ने ठीक ही कहा है कि *''कृषि उद्योग का जीवन–रक्त है।''*

3. आन्तरिक व्यापार में महत्त्व (Importance in Internal Trade)—देश का आन्तरिक व्यापार भी कृषि पर
आधारित है। वास्तव में आन्तरिक व्यापार कृषि पदार्थों, जैसे—अनाज, चीनी, दूध, आदि के क्रय–विक्रय पर निर्भर करता
है। इन वस्तुओं की माँग निरन्तर बढ़ती जा रही है। इस प्रकार कृषि के कारण आन्तरिक व्यापार भी विकसित हो रहा है।

4. विदेशी व्यापार में महत्त्व (Importance in Foreign Trade)—भारत में विदेशी व्यापार कृषि पर निर्भर
करता है। भारत के विदेशी व्यापार में कृषि-उपजों, जैसे—चाय, कॉफी, तम्बाकू, चीनी, पटसन, कपास, काजू इत्यादि
का विशेष महत्त्व है। भारत को कृषि पदार्थों के निर्यात से करोड़ों रुपये की विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है।

5. रोजगार में महत्त्व (Importance in Employment)—भारत में लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है। सन्
1990 में लगभग 65% लोग कृषि पर निर्भर थे। सन् 2007 के अनुसार भारत में लगभग 56% कार्यशील जनसंख्या
का भाग कृषि तथा उससे सम्बन्धित व्यवसायों में लगा हुआ है। शेष भाग अन्य क्रियाओं में कार्यरत है। इस प्रकार
कृषि अभी भी रोज़गार का मुख्य साधन है।

6. जीवन का साधन (Source of Living)— भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि से भारत की लगभग 112 करोड़
जनसंख्या को अनाज, दालें, चीनी, गुड़, वनस्पति तेल, कपास, ईंधन, दूध, अण्डा, माँस आदि प्राप्त होते हैं। इसके
साथ ही, कृषि से लगभग 42 करोड़ पशुओं के लिए चारा भी प्राप्त होता है। अतः कृषि लोगों व पशुओं के लिए
जीवन का साधन है।

7. पूँजी-निर्माण में महत्त्व (Importance in Capital Formation)—भारत में हरित क्रान्ति के पश्चात् कृषि
उत्पादकता में वृद्धि हुई है। इससे लोगों की बचत और निवेश की क्षमता भी बढ़ी है। परिणामस्वरूप पूँजी–निर्माण की
दर में भी वृद्धि हुई है जो कि देश के आर्थिक विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

**8. यातायात व संचार के साधनों का विकास (Development of the Means of Transport and
Communications)**—यातायात के विभिन्न साधनों, जैसे–रेलवे, सड़कों, जल यातायात आदि के द्वारा ही कृषि–उपज
को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जा सकता है। यातायात और संचार के साधनों का विकस कृषि विकास के
कारण ही सम्भव हुआ है।

Ravi Shankar Ray

9. सामाजिक महत्त्व (Social Importance)— भारत में कृषि का सामाजिक महत्त्व भी काफी है। कृषि ने हमारे ...चार, दृष्टिकोण तथा धर्म को सुरक्षित रखा है। वास्तविक भारत गाँवों में ही बसा हुआ है जिसमें हमारी संस्कृति की ...लक दिखाई देती है। वास्तव में कृषि भारतीय संस्कृति की रक्षक है।

10. अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में महत्त्व (Importance in International Field)— कृषि-पदार्थों के कारण भारत ...न्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध है। जैसे निम्न तालिका से प्रतीत होता है–

फसल	विश्व में स्थान
चाय	पहला
जूट, कपास, चावल	दूसरा
रबड़	तीसरा

इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय मानचित्र पर भारत को महत्त्वपूर्ण स्थान दिलाने में कृषि का विशेष महत्त्व है।

...ardness of Agriculture *or* Low

Ravi Shankar Ray

* Institutional change or Institutional structure - Land Reforms, Farm size and productivity.

संस्थागत सुधारों के बिना तकनीकी उन्नति सम्भव नहीं है। संस्थागत नीतियों द्वारा ही कृषि-उत्पादकता बढ़ सकती है। भारत में स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात् निम्न **संस्थागत नीतियां** अपनाई गई हैं-

1. जमींदारी प्रथा का उन्मूलन (Abolition of Zamindari and Other Intermediators)— स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात् जागीरदारों और बँटाईदारों आदि मध्यस्थों का देश की भूमि के 40% भाग पर अधिकार था। काश्तकारों के शोषण तथा कृषि के पिछड़ेपन का यही कारण था। पहली तथा दूसरी योजना में इन सभी मध्यस्थों का अन्त किया गया। इससे लगभग 2½ करोड़ से अधिक काश्तकार मालिक बन चुके हैं। उनका सरकार से सीधा सम्बन्ध स्थापित हो चुका है। परिणामस्वरूप बहुत-सी कृषि योग्य बेकार भूमि सरकार के हाथ में आ गई। इस भूमि पर भूमिहीन किसानों को बसाया गया है। इससे कृषि-क्षेत्र और उत्पादन में भी वृद्धि हुई है।

2. भूमि की उच्चतम सीमा निर्धारण (Ceiling on Land Holdings)—इसका अभिप्राय यह है कि एक परिवार या व्यक्ति के लिए खेती योग्य भूमि की एक सीमा निर्धारित कर दी जाती है। इसलिए भारत में विभिन्न राज्यों में

Ravi Shankar Ray